International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

मीडिया के नये रूपों का सामाजिक प्रभाव

डॉ0 विद्याधर पाण्डेय
एसोसिएट प्रोफेसर
दीनदयाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सैदाबाद, इलाहाबाद

आज हम जिस युग में हैं, उसको सूचनाक्रांति का युग कहा जाता है। जनसंचार अपने माध्यमों के द्वारा गतिशीलता के उच्च पायदान पर विकासशील है। आज जीवन का दूसरा नाम मीडिया हो गया है। वह हमारी संस्कृति, सभ्यता और रहन–सहन में इस प्रकार रच–बस गया है कि उससे दूर होने का मतलब सांसों का बंद हो जाना है। आज मीडिया ने परम्परागत पद्धति के साथ–साथ कुछ नये माध्यमों को अपनाया है जिसके कारण जनसंचार की परिभाषा बदली है। यही वजह है कि आज उसे मीडिया नहीं बल्कि न्यू मीडिया कहा जा रहा है और जिस तेज़ी के साथ यह सुपरिचित, सुप्रचालित और निरंतर विकास की तरफ अग्रसर हैं शायाद कुछ सालों बाद उसका रूप, नाम और परिभाषा भी बदल जाए।

बीसवीं सदी में जनसंचार को नया परिचय मिला जिसमें रेडियो, पत्र–पत्रिका, टेलीविजन न सिर्फ मनोरंजन और ज्ञानवर्धन का साधन बना बल्कि इसने ही भारत के जनसंचार के ढांचे को खड़ा किया। आज़ादी का ताना–बाना जिस माध्यम से तैयार हुआ उसमे तात्कालीन प्रिंट मीडिया की काफी महत्वपूर्ण भूमिका रही। आजादी के बाद संविधान, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के साथ–साथ मीडिया भी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होता रहा। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में वैश्वीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण का दौर शुरू होता है। भारत भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा बल्कि इसी कारणवश संचार माध्यमों में ज़बरदस्त बदलाव आया फिर वह संचार क्रांति कहलाया। कम्प्यूटर और इण्टरनेट ने भारत को दुनिया से जोड़ दिया। देखते ही देखते भारत ग्लोबल हो गया।

आज इक्कीसवीं शताब्दी में भारत दुनिया के अधिकतर संचार तकनीकों से युक्त हैं। दुनिया का सबसे बड़ा मोबाइल उपभोक्ता भारत में है। आज भारत के ग्रामीण अंचलों को भी इन्टरनेट से जोड़ा जा रहा है। ब्लॉग से लेकर न्यूज पोर्टल तक और फेसबुक से लेकर गूगल हैंग आउट तक सब न्यू मीडिया का ही स्वरूप है। भारत के किसी गाँव से अमेरिका के किसी गाँव को जोड़ने का काम जिस माध्यम के द्वारा संभव हुआ उसी को हम आज न्यू मीडिया के नाम से जानते हैं। न्यू मीडिया ने हमें सिर्फ आपस में जुड़ने का सुविधा मात्र नहीं दिया बल्कि अपने व्यापार, राजनीति और संस्कृति आदि को दुनिया के कोने–कोने तक पहुँचाने का भी साधन बना।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

1980 में जब कम्प्यूटर ने काली स्क्रीन से आगे चित्रात्मक स्क्रीन की ओर कदम बढ़ाया तब न्यू मीडिया का उभार शुरू हुआ। इसके अगले दशक में शिक्षा और मनोरंजन के लिए कॉम्पैक्ट डिस्क (ब्व) की लोकप्रियता का दौर आया तो न्यू मीडिया को मजबूती से पाँव जमाने का मौका मिला। फिर 1995 के बाद इण्टरनेट के प्रसार के साथ–साथ न्यू मीडिया का स्वर्ण युग शुरू हुआ जो आज भी जारी है।

नये मीडिया के विविध रूप

अधिकांश लोग न्यू मीडिया का अर्थ इंटरनेट के जरिए होने वाली पत्रकारिता से लगाते हैं। लेकिन न्यू मीडिया समाचारों, लेखों, सृजनात्मक लेखन या पत्रकारिता तक सीमित नहीं है। वास्तव में न्यू मीडिया की परिभाषा पारंपरिक मीडिया की तर्ज पर दी ही नहीं जा सकती। न सिर्फ समाचार पत्रों की वेबसाइटें और पोर्टल न्यू मीडिया के दायरे में आते हैं। बल्कि नौकरी ढूंढने वाली वेबसाइट, रिश्ते तलाशने वाले पोर्टल, ब्लॉग, स्ट्रीमिंग ऑडियो–वीडियो, ईमेल, चैटिंग, इंटरनेट–फोन, इंटरनेट पर होने वाली खरीददारी, नीलामी, फिल्मों की सीडी–डीवीडी, डिजिटल कैमरे से लिए फोटोग्राफ, इंटरनेट सर्वेक्षण, इंटरनेट आधारित चर्चा के मंच, दोस्त बनाने वाली वेबसाइटें और साफ्टवेयर तक न्यू मीडिया का हिस्सा हैं। न्यू मीडिया वास्तव में परम्परागत मीडिया का संशोधित रूप है। न्यू मीडिया संचार का वह संवादात्मक स्वरूप है जिसमें इन्टरनेट का उपयोग करते हुए लोगों से संवाद स्थापित करते हैं।

नये मीडिया का पक्ष और विपक्ष

न्यू मीडिया इतनी बड़ी क्रांति का रूप धारण कर चुका है कि आज हमारे जीवन के हर एक गतिविधियों के साथ–साथ बगलगीर होकर और कदम से कदम मिलाकर अग्रसर है। इसलिए उससे प्रभावित होना तय है। अब ये अलग तथ्य है कि उसका प्रभाव नकारात्मक है या सकारात्मक। क्योंकि इन दोनों चीज़ों का हर माध्यम में पाया जाना अनिवार्य है। ये तो उसके यूजर पर निर्भर करता है कि वह उसका प्रयोग किस प्रकार कर रहा है। ऐसा ही कुछ मामला न्यू मीडिया का भी है। चूँकि समाज पर इसके प्रभाव का तो कोई जवाब ही नहीं है इसलिए इसके सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव का होना वाजिब मालूम होता है। न्यू मीडिया में सबसे प्रभावशाली माध्यम सोशल नेटवर्किंग के रूप में उभर कर सामने आया है। आज फेसबुक और ट्विटर के बारे में कौन नहीं जानता है। छोटे से छोटे मोबाइल फोन में फेसबुक, ट्विटर, ूंजेनचए लवनजनइमए हववहसमए सभी कुछ आसानी के साथ दस्तयाब हैं। इन सब माध्यमों ने आज समाज पर क्रांतिकारी प्रभाव डाला है। इन्होंने आकर सरहदी हदबंदी को ही खतम कर दिया है यही वजह है कि यह बहुत से देशों के लिए परेशानी का सबब बनता जा रहा है। जहाँ इन्होंने पूरी दुनिया को लाकर एक मोबाइल में बंद कर दिया है और लोगों को दूर रहकर भी पास रहने और 24 घंटे संवाद स्थापित करने का मौका दिया है तो वहीं पर इसमें किसी भी देश और समुदाय में क्रांति फैलाने और एक ही जगह बैठकर एक मोबाइल फोन द्वारा किसी भी राजनीति को उलट–पलट करने की क्षमता भी मौजूद है। अन्ना आन्दोलन, आम आदमी पार्टी की कामयाबी और हाल में हुए लोकसभा और विधान

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

सभा इलेक्शन में इसके नकारात्मक और सकारात्मक प्रभाव को सामने रखकर इसकी शक्ति को आँका जा सकता है। एक बात साफ है कि इसका अधिकतर उपभोक्ता युवा वर्ग है।

मीडिया के नये रूप और युवा

जनसंचार माध्यमों में हाल ही कुछ वर्षों में एक क्रांति का उदय हुआ है जिससे न्यू मीडिया का व्यापक रूप उभर कर सामने आया है। जिसने मॉर्सल मैक्लुहान के वक्तव्य को पूर्णतः सत्य कर दिया कि सम्पूर्ण दुनिया एक गांव में तब्दील हो जाएगी। मनुष्य के बोलने का अंदाज बदल जाएगा और क्रिया–कलाप भी। ऐसा ही हुआ है, आज युवा रेडियो सुन रहा है, टेलीविजन देख रहा है, मोबाइल से बात कर रहा है और अंगुलियों से कम्प्यूटर चला रहा है। कहने का मतलब यह है कि युवा एक साथ कई तकनीकों से संचार कर रहा है। जनसंचार माध्यमों का युवा वर्ग पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में बातें करें तो इसके भी दो रूप दिखाई पड़ते हैं–सकारात्मक और नकारात्मक।

अब मुख्य प्रश्न यह उठता है कि आज की युवा पीढ़ी जनसंचार माध्यमों के किस पहलू पर अधिक अग्रसरित हो रही है। सकारात्मक पहलू पर या नकारात्मक पहलू पर। युवाओं पर मीडिया का प्रभाव मौजूदा आंकड़ों के मुताबिक कहें तो देश की तकरीबन 58 फीसदी आबादी युवाओं की है। ये वो वर्ग है जो सबसे ज्यादा सपने देखता है और उन सपनों को पूरा करने के लिए जी–जान लगाता है। मीडिया इन युवाओं को सपने दिखाने से लेकर इन्हें निखारने तक में अहम भूमिका निभाने का काम करता है। अखबार–पत्र–पत्रिकाएं जहां युवाओं को जानकारी मुहैया कराने का दायित्व निभा रहे हैं, वहीं टेलीविजन–रेडियो–सिनेमा उन्हें मनोरंजन के साथ आधुनिक जीवन जीने का सलीका सिखा रहे हैं। लेकिन युवाओं पर सबसे ज्यादा और अहम असर हो रहा है न्यू–मीडिया का। जी हां, इंटरनेट से लेकर तीसरी पीढ़ी (थ्री–जी) मोबाइल तक का असर यूं है कि देश–दुनिया की सरहदों का मतलब इन युवाओं के लिए खत्म हो गया है। इनके सपनों की उड़ान को तकनीक ने मानों पंख लगा दिए हैं। ब्लॉगिंग के जरिए जहां से युवा अपनी समझ–ज्ञान–पिपासा–जिज्ञासा–कौतूहल– भड़ास निकालने का काम कर रहे हैं। वहीं सोशल मीडिया साइट्स के जरिए दुनिया भर में अपनी समान मानसिकता वाले लोगों को जोड़कर सामाजिक सरोकार–दायित्व को पूरी तन्मयता से पूरी कर रहे हैं। हाल में अरब देशों में आई क्रांति इसका सबसे तरोताजा उदाहरण है। इन आंदोलनों के जरिए युवाओं ने सामाजिक बदलाव में अपनी भूमिका का लोहा मनवाया तो युवाओं के जरिए मीडिया का भी दम पूरी दुनिया ने देखा। युवाओं पर इसका अधिक प्रभाव इसलिए पड़ा क्योंकि वे उपभोक्तावादी प्रवृति के होते हैं। वे बिना किसी हिचकिचाहट के किसी भी नई तकनीक का उपभोग करना शुरू कर देते हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कियुवा वर्ग जनसंचार की चमक के माया जाल में फंसता जा रहा है। आज युवाओं में तेजी से पनप रहे मनोविकारों, दिशाहीनता को न्यू मीडिया से जोड़कर देखा जा सकता है। पश्चिम का अंधा अनुसरण करने की चाहत

उन्हें आधुनिकता का पर्याय लगने लगी है। इनसे युवाओं की पूरी जीवनशैली प्रभावित दिखाई पड़ रही है। जिससे रहन–सहन, खान–पान, वेशभूषा और बोलचाल सभी समग्र रूप से शामिल है। शराब और धूम्रपान उन्हें एक फैशन का ढंग लगने लगा हे। नैतिक मूल्यों के हनन में ये कारण मुख्य रूप से उत्तरदायी है। आपसी रिश्ते–नातों में बढ़ती दूरियां और परिवारों में बिखराव की स्थिति इसके दुखदायी परिणाम हैं।

वास्तव में न्यू मीडिया ने ग्लोबल विलेज की अवधारणा को जन्म दिया है। इसके अन्तर्गत आने वाले माध्यमों ने युवा वर्ग पर अपना व्यापक प्रभाव छोड़ा है। इनका प्रभाव इतना शक्तिशाली है कि आज के युवा इन माध्यमों के बिना अपने दिन की शुरूआत ही नहीं कर सकते। मोबाइल यह एक ऐसा माध्यम है जिससे दूर बैठे व्यक्ति के साथ बात की जा सकती है तथा अपने हसीन पलों को चलचित्रों के रूप में कैद किया जा सकता है। यह तो इसका सदुपयोग है परन्तु आज युवा इस माध्यम का गलत प्रयोग कर एमएमएस बनाते हैं। इसी प्रकार इंटरनेट जनसंचार माध्यमों में सबसे प्रभावशाली है जिसने दूरियों को कम कर दिया है। इसका अधिकतर उपभोग युवा वर्ग द्वारा किया जाता है जहां इसके द्वारा युवाओं को सभी जानकारियां उपलब्ध होती हैं। ये ज्ञानवर्धन में तो सहायक है परंतु आज वर्तमान समय में युवा द्वारा इसका दुरूपयोग अधिक होता है। हालांकि संस्कारी व्यक्तियों द्वारा इस मीडिया का सही उपयोग किया जा रहा है वहीं लगभग 100 में से 85 प्रतिशत लोग पोर्न साइटों का प्रयोग करते हैं और हैरतगंगेज करने वाली बात है कि सर्वाधिक विजिटर भी इन पोर्न साइटों के ही हैं। इन अश्लील साइटों पर जाकर वे अपनी मन को शांत करते हैं। परन्तु वे यह ही जानते कि इससे उनका और समाज दोनों का नैतिक पतन होता है। साथ ही इंटरनेट के अधिक उपयोग ने साइबर क्राइम जैसे अपराधों को जन्म देकर युवाओं में अपराध करने का नया रास्ता उत्पन्न कर दिया है। जिससे आज का युवा वर्ग मानसिक, शारीरिक और आर्थिक पतन की ओर अग्रसरित हो रहा है। जो हमारे समाज के लिए चिंता का विषय है।

सोशल मीडिया

शायद यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि सोशल मीडिया का प्रभाव समाज पर कैसा है। क्योंकि आज यह हम सभी के लिए सबसे अधिक विजिट करने वाला साईट बन गया है। हम खाली वक़्त में हमेशा फेसबुक आदि को ही अपना दोस्त बनाते हैं इसने हमारे बीच दूरियों को मिटा दिया है। इसे के चलते हम एक ही पेज पर देश दुनिया की खबरे, दुनिया के किसी भी कोने में घटित होने वाली आम सी घटना भी हमारे सामने मिनटों में आ जाती है। इसकी शक्ति का अंदाज़ा यहीं से लग जाता है कि आज कोई भी पेज हो, वहां पर शेयर का आप्शन होता है और कहा जाता है कि इसको फेसबुक पर शेयर करें। मकसद साफ है कि सबको पता है कि अगर हम फेसबुक पेज पर चले गए तो मिनटों में अरबो लोग इसके दर्शक या पाठक हो जायेंगे। इन सबका कारण इस पर किसी और का नियंत्रण न होना है हर कोई पत्रकार और हर किसी का मोबाइल मीडिया हाउस है। शायद यही इसका नकारात्मक पक्ष भी है। क्योंकि कई बार इस आज़ादी का गलत फायदा भी उठाया जाता है। हाल में हुई कई बड़ी घटनाएँ इसकी ताज़ा मिसाल हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

वास्तव में मोटे तौर पर न्यू मीडिया और खास तौर पर सोशल मीडिया के उपयोग, दुरूपयोग, आचरण, अधिकारों और दायित्वों का मुद्दा विचार–विमर्श योग्य है। इस मीडिया ने इंटरनेट की मुक्त प्रकृति का लाभ तो उठाया है लेकिन उसके अनुरूप जिस किस्म का दायित्वबोध होना चाहिए वह कहीं दिखाई नहीं देता।

इस प्रकार मीडिया ने आज की जीवनशैली को बहुत अधिक प्रभावित किया है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी की इस नयी तकनीक ने विश्व की सीमाओं को तोड़ दिया है। पूरी दुनिया एक वैश्विक ग्राम में बदल चुकी है। इण्टरनेट ने आज विश्व के लोगों को एक–दूसरे से जोड़ दिया है। सोशल साइट्स के जरिये आज कोई भी व्यक्ति एक दूसरे से कहीं से भी सम्पर्क साध सकता है। इसका निरन्तर प्रयोग करने वाले युवाओं की संख्या निरन्तर बढ़ रही है। परन्तु इसके प्रभाव के विषय में होने वाली चर्चा अभी समाप्ति के बिन्दु तक नहीं पहुंची है। अतः सिर्फ इतना कहना उचित होगा कि मीडिया एक ऐसा जिन्न है जिस पर यदि आपने नियंत्रण अपने दिमाग से किया तो यह आपके व्यक्तित्व और सामाजिक स्तर के साथ आर्थिक जमीन को नये आयाम दे सकता है। लेकिन यदि यह जिन्न आपके दिमाग पर हावी हो जाये तो इसकी विनाश लीला व्यक्ति से आरम्भ होकर समाज पर ही समाप्त होगी इसकी कोई गारण्टी नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. पाठक राममोहन, 'इलेक्ट्रानिक माध्यम रेडियो एवं दूरदर्शन', यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1998
2. नागपाल जितेन्द्र, 'मीडिया भी बना रहा है हिंसक', जागरण सखी, जुलाई, 2008
3. द्विवेदी, संजय, सोशल नेटवर्किंग नये समय का संवाद
4. भारत प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
5. नंदा वर्तिका, फेसबुक के नाम एक पाती।